डोलोरेस हुएर्टा

खेतिहर मज़दूरों की नेता

डोलोरेस हुएर्टा (1930 -)

डोलोरेस हुएर्टा का जन्म 10 अप्रैल 1930 को डावसन, न्यू मैक्सिको में हुआ. उनके पिता जुआन फर्नांडीज एक खेतिहर मज़दूर थे और सब्जियां उगाते थे. उनकी मां एलिसिया फर्नांडीज घर पर ही रहकर डोलोरेस और उसके बड़े भाइयों की परवरिश करती थीं.

जब डोलोरस छोटी बच्ची थीं तभी उस के माता-पिता का तलाक हो गया. फिर मां अपने परिवार को स्टॉकटन, कैलिफोर्निया ले गईं. डोलोरेस के दादाजी हरकुलानो शावेज़ भी उनके साथ गए.

एक अकेली माँ के रूप में मिसेज फर्नांडीज के लिए जीवन काफी मुश्किल था. उनके जैसे कठिन काम करने वालों के लिए कोई भी नौकरी उपलब्ध नहीं थी. अंत में, उन्हें एक कारखाने के डिब्बा बंद फलों को पैक करने का काम मिला. उन्होंने होटल में वेटर के रूप में दूसरी नौकरी भी की. उनके पिता ने डोलोरेस और उसके भाइयों की घर में देखभाल की.

डोलोरेस अपने दादाजी के बहुत करीब थीं. उनके साथ बातें करने और हंसने में उसे बहुत मज़ा आता था. क्योंकि वह बहुत बात करती थी इसलिए दादाजी, डोलोरेस को "सात-जीभ" कहकर चिढ़ाते थे.

एक दिन श्रीमती फर्नांडीज को एक शानदार मौका मिला. उनके कुछ दोस्तों ने उनसे एक होटल और रेस्तरां चलाने को कहा. श्रीमती फर्नांडीज ने यह काम सहर्ष स्वीकार कर लिया. डोलोरेस और उसके भाइयों ने इसमें अपनी माँ की मदद की. उन्होंने फर्श को साफ़ किया और पलंगों की चादरें बदलीं. उन्होंने सब्ज़ियां काटने और कपड़े धोने का काम भी किया. स्कूल में एक लंबा दिन गुज़ारने के बाद भी डोलोरेस अपनी माँ की मदद करती थी.

जब डोलोरेस बड़ी हो रही थी वो समय कैलिफोर्निया में अधिकांश मैक्सिकन-अमेरिकियों के लिए एक बहुत कठिन समय था. लोग खेतों में लंबे घंटों तक काम करने को मज़बूर थे.

वे लेट्यूस, स्ट्रॉबेरी और कपास के खेतो में मज़दूरी करते थे. वे तेज़ गर्म सूरज के नीचे लंबे घंटों तक बहुत कम पैसों में काम करते थे. कभी-कभी सिर्फ भोजन के लिए और सोने के लिए जगह जुगाड़ करने के लिए पूरे परिवार को कंधे से कंधा मिलाकर काम करना पड़ता था.

कभी-कभी श्रीमती फर्नांडीज श्रमिकों को मुफ्त में अपने होटल में रहने देती हैं. माँ ने डोलोरेस को दयालुता और खुद से कम भाग्यशाली लोगों की मदद करना सिखाया था.

श्रीमती फर्नांडीज ने अपने समुदाय को बेहतर बनाने के लिए भी काम किया. उन्होंने डोलोरस को हमेशा उचित बात बोलने के लिए प्रोत्साहित किया.

खेत श्रमिकों के कठिन जीवन ने डोलोरेस को दुखी किया. वह अपने परिवार, घर, स्कूल, संगीत और नृत्य के सबक लेने का मौका पाकर खुद को भाग्यशाली समझती थी. डोलोरेस ने इन अवसरों का भरपूर लाभ उठाया.

उसने स्कूल में कड़ी मेहनत की और फिर वो स्कूल टीचर बनने के लिए कॉलेज में पढ़ने गई. वह अपने छात्रों से प्यार करती थी, लेकिन उनकी गरीबी की हालत देखकर उसे बहुत गुस्सा आता था. डोलोरेस ने कहा, "मैं बच्चों को भूखा और बिना जूतों के स्कूल आता देखकर बहुत दुखी हुई."

उसने उनकी हालत में कुछ बदलाव लाने का फ़ैसला किया. उसने अध्यापन की नौकरी छोड़ दी. उसके बाद उसने खेत मजदूरों को संगठित करना शुरू किया. डोलोरेस ने उन्हें एक साथ संगठित होकर अधिक वेतन की मांग उठाने को कहा. वह चाहती थीं कि वे काम की बेहतर परिस्थितियों की मांग भी करें.

डोलोरेस को पता चला कि खेत मजदूरों की मदद करने वाली वो अकेली नहीं थीं. 1955 में, वह सीज़र शावेज से मिलीं, उनके सपने एक-जैसे ही थे. सीज़र ने अपने परिवार की मदद करने के लिए पूरी ज़िंदगी खेतों में काम किया था. डोलोरेस और सीजर ने अब खेत मजदूरों की मदद के लिए साथ-साथ काम किया.
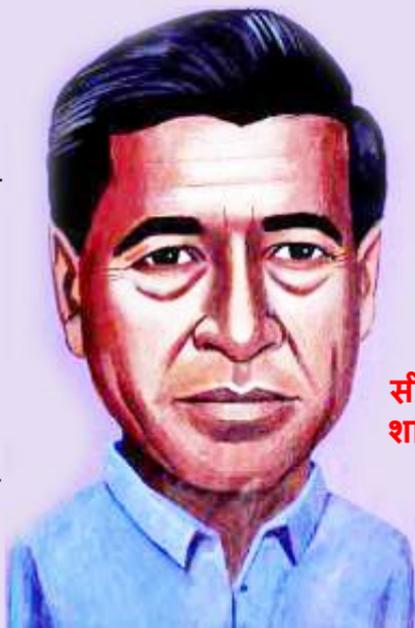
30 सितंबर, 1962 को डोलोरेस और सीजर ने एक विशेष बैठक की. उन्होंने फैसला किया कि यह खेत श्रमिकों के लिए अब अपना संगठन बनाने का समय आ गया था. समूह का लक्ष्य एक साथ संगठित होकर बेहतर वेतन की मांग करना था. उस रात, नेशनल फ़ार्म वर्कर्स एसोसिएशन (NFWA) का जन्म हुआ. सीज़र शावेज़ को उसका अध्यक्ष चुना गया और डोलोरेस को संगठन का उपाध्यक्ष चुना गया.

1965 में डोलोरेस और सीज़र ने अंगूर बीनने वाले मज़दूरों की हड़ताल का नेतृत्व किया. जब तक उन्हें काम के लिए अधिक भुगतान नहीं मिलेगा तब तक वे काम करना बंद करेंगे और हड़ताल करेंगे. उन्होंने काम की बेहतर परिस्थितिओं की मांग भी की. मज़दूरों की स्थिति की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए सीज़र शावेज ने सैक्रामेंटो, कैलिफ़ोर्निया राज्य के कैपिटल में तीन-सौ मील की पैदल यात्रा की. हड़ताल करने वाले मज़दूरों को प्रोत्साहित करने के लिए डोलोरेस पीछे रहीं.

मत खरीदो! ज़हरीले अंगूर!

समाचार पत्रों और टेलीविजन ने मज़दूरों के जलूस और यात्रा को दिखाया. देश भर के लोगों को अंगूर बीनने वालों के कठिन जीवन के बारे में मालूम पड़ा. अंत में, एक कंपनी ने श्रमिकों को अधिक वेतन देने और उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए. डोलोरेस ने इस जीत का अपने दोस्तों के साथ जश्न मनाया. बाद में अन्य अंगूर उत्पादकों ने भी मज़दूरों की कुछ मांगें मानी.

डोलोरेस और सीजर ने अब अपने संगठन का नाम बदलकर यूनाइटेड फ़ार्म वर्कर्स ऑफ़ अमेरिका रखा.

खेत श्रमिकों के लिए जीवन में कुछ सुधार ज़रूर हुआ, लेकिन अभी भी बहुत काम बाकी था. डोलोरेस ने पौधों पर डाले जा रहे हानिकारक कीटनाशकों के खिलाफ भी अपनी आवाज़ उठाई. खेत मजदूरों के लिए बेहतर कानून बनाने में मदद करने के लिए वो वाशिंगटन गईं. उन्होंने "ला कॉसा" के लिए काम करते हुए पूरे देश की यात्रा की और कृषि श्रमिकों की मदद की. 1973 में उन्होंने अंगूर और लेटस (हरी सब्ज़ी) के बहिष्कार का नेतृत्व किया. वो चाहती थीं कि हर अमेरिकी अंगूर खरीदना बंद करे और मजदूरों को अधिक भुगतान मिले. उनके संघर्ष का अच्छा परिणाम निकला और सरकार ने कानून बदले.

डोलोरेस ने न केवल खेत मज़दूरों, बल्कि महिलाओं और बच्चों के लिए भी काम किया. वह महिलाओं के लिए समान अधिकार और बच्चों के लिए बेहतर स्कूल चाहती थीं. डोलोरेस को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए कई पुरस्कार मिले. 1993 में उन्हें नेशनल विमेंस हॉल ऑफ फेम के लिए चुना गया.

मुश्किल समय में भी डोलोरेस सच बोलने से नहीं डरती थीं. उन्होंने यह सीख अपनी मां से सीखी थी. डोलोरेस हुएर्टा के काम और संघर्ष ने कई लोगों के जीवन को बेहतर बनाया.

समाप्त